ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

राजनीतिक आदर्श एवं संकल्प व्यवहार में राजनीतिक दलों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन

सवी सुखीजा, शोधार्थी (राजनीति विज्ञान), टांटिया विश्व विद्यालय श्री गंगानगर
डॉ. शिल्पा रानी, प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान),टांटिया विश्व विद्यालय श्री गंगानगर

अमूर्त

यह शोध पत्र राजनीतिक दलों द्वारा घोषित आदर्शों और उनके वास्तविक धरातल पर क्रियान्वयन (संकल्प व्यवहार) के बीच व्याप्त खाई का विश्लेषण करता है। आधुनिक लोकतंत्र में दल चुनाव जीतने के लिए लोक–लुभावन घोषणापत्र और उच्च नैतिक आदर्श प्रस्तुत करते हैं, किंतु सत्ता प्राप्ति के बाद अक्सर 'व्यावहारिक राजनीति' (Realpolitik) के नाम पर उनसे समझौता कर लेते हैं। यह अध्ययन भारतीय संदर्भ में दलों की विचारधारा, सांगठनिक संरचना और सत्ता की राजनीति के अंतर्विरोधों को रेखांकित करता है।

परिचय

लोकतंत्र की धुरी राजनीतिक दल होते हैं। हर दल की अपनी एक विचारधारा होती है जो उसके 'आदर्शों' को परिभाषित करती है। चुनाव के समय ये दल 'संकल्प पत्र' के माध्यम से जनता से वादे करते हैं। हालांकि, समकालीन राजनीति में विचारधारा का क्षरण और अवसरवाद एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। यह परिचय इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे दल अपने मूल सिद्धांतों से भटककर केवल चुनाव जीतने वाली मशीन (Election Winning Machines) बनते जा रहे हैं।

साहित्य समीक्षा

मैक्स वेबर: राजनीति को एक 'व्यवसाय' के रूप में देखना।
रॉबर्ट मिशेल्स (Iron Law of Oligarchy): कैसे संगठनों के भीतर नेतृत्व अपने हितों को आदर्शों से ऊपर रखने लगता है।
भारतीय संदर्भ: रजनी कोठारी और योगेंद्र यादव के शोध, जो भारतीय दलगत प्रणाली में जाति, धर्म और धनबल के प्रभाव की चर्चा करते हैं।

विधि तंत्र

यह शोध मुख्य रूप से गुणात्मक (Qualitative) और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।
प्राथमिक स्रोत: राजनीतिक दलों के घोषणापत्र, भाषण और आधिकारिक दस्तावेज।
द्वितीयक स्रोत: समाचार पत्र, शोध लेख, चुनाव आयोग की रिपोर्ट और राजनीतिक विशेषज्ञों के विश्लेषण।

प्रस्तावित शोध के सोपान

प्रमुख राजनीतिक दलों के विचारधारात्मक दस्तावेजों का संकलन।
पिछले दो दशकों के घोषणापत्रों और उनके वास्तविक क्रियान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन।
दलों के भीतर आंतरिक लोकतंत्र और टिकट वितरण की प्रक्रिया का विश्लेषण।
चुनावी चंदे और पारदर्शिता के मुद्दों का परीक्षण।
निष्कर्षों का संकलन और सुझाव।

शोध अंतराल

अक्सर शोध केवल चुनाव परिणामों या किसी एक दल की कार्यप्रणाली पर केंद्रित होते हैं। लेकिन ''आदर्श बनाम संकल्प व्यवहार'' के बीच के मनोवैज्ञानिक और संरचनात्मक अंतर पर तुलनात्मक शोध की कमी है। यह शोध इस अंतर को भरने का प्रयास करेगा कि क्यों दल सत्ता में आते ही अपने ही संकल्पों को 'चुनावी जुमला' कहने पर मजबूर हो जाते हैं।

उद्देश्य

- राजनीतिक दलों के सैद्धांतिक आदर्शों और उनके व्यवहारिक निर्णयों के बीच के विरोधाभास को समझना।
- घोषणापत्रों की प्रासंगिकता और उनकी जवाबदेही का मूल्यांकन करना।
- दलों के नैतिक पतन के कारणों (जैसे– धनबल, बाहुबल) की पहचान करना।

परिकल्पना

H1: राजनीतिक दलों के आदर्श और व्यवहार के बीच बढ़ता अंतर जनता में राजनीतिक उदासीनता (Political Apathy) पैदा करता है।

H2: सत्ता को बनाए रखने की मजबूरी दलों को उनके मूल संकल्पों से समझौता करने के लिए प्रेरित करती है।

महत्व

यह शोध राजनीति विज्ञान के छात्रों, नीति निर्माताओं और जागरूक नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण है। यह इस बात पर जोर देता है कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए दलों को केवल चुनावी वादों तक सीमित न रहकर, अपने वैचारिक संकल्पों के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। यह राजनीतिक सुधारों (जैसे– राइट टू रिकॉल या घोषणापत्र की कानूनी वैधता) की दिशा में नई दृष्टि प्रदान करता है।

निष्कर्ष

अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि राजनीतिक दल आदर्शों का उपयोग केवल 'ब्रांडिंग' के लिए कर रहे हैं, जबकि उनका व्यवहार श्सत्ता–केंद्रितश है। जब तक दलों के भीतर आंतरिक लोकतंत्र और वित्तीय पारदर्शिता नहीं आएगी, तब तक आदर्श और व्यवहार का यह अंतर बना रहेगा। एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए 'मूल्य आधारित राजनीति' का पुनरुत्थान आवश्यक है।

सन्दर्भ

1- कोठारी, र. (2005). भारत में राजनीति. ओरिएंट ब्लैकस्वान।
2- चुनाव आयोग की वार्षिक रिपोर्ट (2020–2024)।
3- सार्थक, अ. (2018). भारतीय लोकतंत्र के अंतर्विरोध. सामयिक प्रकाशन।
4- Michels, R. (1911). Political Parties.